IMPACT FACTOR 5.47

ISSN 2349-1027

International Registered & Recognized Research Journal Related to Higher Education for All Subjects

INDO WESTERN RESEARCHERS

UGC APPROVED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XIII, Vol. II

Year-VII,Bi-Annual(Half Yearly)

(Aug. 2020 To Jan. 2021)

Editorial Office :

'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Website

www.irasg.com

Contact : - 02382 - 241913
09423346913 / 09637935252
09503814000 / 07276301000

E-mail :
visiongroup1994@gmail.com
interlinkresearch@rediffmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Published by :
Indo Asian Publication,
Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.)India

Price : ₹ 200/-

EDITOR IN CHIEF

Dr. Nilam Chhangani
Head, Dept. of Economics,KNG College,
Karanja Lad, Dist. Washim (MS) India

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Babasaheb Gore
Principal
Janvikas Mahavidyalaya,
Bansarola, Dist. Beed (MS)

Dr. Balaji G. Kamble
Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar College,
Latur, Dist. Latur (M.S.)

DEPUTY EDITOR

Dr. Ramesh Gangthade
Head, Dept. of History,
K. T. P. Mahavidyalaya,
Hadolati, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Premchand Chavan
Dept. of Hindi
M.S. Irani Mahavidyalaya,
Gulbarga, Dist. Gulbarga (Karnataka)

CO - EDITOR

Dr. Mahebubkhan D. Pathan
Head, Dept. of English,
Sanjeevanee Mahavidyalaya,
Chapoli, Dist. Latur, (M.S.)

Dr. Rajendra Ganapure
HeS.M.P. Mahavidyalaya,
Murum, Dist. Osmanabad(M.S.)

MEMBER OF EDITORIAL BOARD

Dr. Mohmmad T. Rahaman
Dept. of Biomedical Science,
International Islamic University,
Mahkota (Malasiya)

Dr. Sivappa Rasapali
Dept. of Chemistry & Biochemistry,
UMASS. Wesport Road,
Dartmouth, MA (U.S.A.)

Dr. Rajendra R. Gawhale
Head, Dept. of Economics,
G. S. Mahavidyalaya,
Khamgaon, Dist. Buldhana (M.S.)

Dr.Sarjerao R. Shinde
Principal
B. K. D. College,
Chakur, Dist. Latur (M.S.)

Dr.Satyenkumar P. Sitapara
Principal
Commerce & BBA College,
Amreli, Dist. Amreli (Gujrat)

Dr. Suma S. Nirani
Head, Dept. of History,
G. P. Porwal College,
Sindgi, Dist. Bijapur (K.S.)

Dr. Allabaksha Jamadar
Head, Dept. of Hindi,
B. K. D. College,
Chakur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Sarjerao R. Shinde
Principal
BKD Mahavidyalaya,
Chakur, Dist. Latur(M.S.)

Dr. Santram P. Mundhe
Head, Dept. Public Adminisptration,
Sanjeevanee Mahavidyalaya,
Chapoli, Dist. Latur, (M.S.)

Dr. Vinod Veer
Head, Dept. of Geography,
Kishan Veer College,
Wai, Dist. Satara (M.S.)

Issue - XIII, Vol.- II
IWR
IMPACT FACTOR 5.47
ISSN 2349-1027
Aug. 2020 To Jan. 2021

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	Problems and Prospects of the Small Scale Industries **Dr. Rita Deshmukh**	1
2	Tax policies for Social and Economical Problems **Dr. R. V. Tanshette**	6
3	The Need For Developing Women Entrepreureship **Dr. Sunil Kedar**	9
4	Quality in Research and Challenges of Plagiarism : An Overview **Dr. Nilam Chhanghani**	16
5	Flow and Heat transfer of Non-newtonian fluid over a stretching sheet **P. T. Manjunatha**	21
6	Role of Laser in Optical Storage Devices **C. T. Birajdar**	35
7	भैरवप्रसाद गुप्त के उपन्यास साहित्य का परिचयात्मक आलेखन **डॉ. महावीर रामजी हाके**	38
8	भारतीय संस्कृति में अश्रम व्यवस्था : एक दृष्टीक्षेप **डॉ. बी. जी. माने**	42
9	राष्ट्रमाता जिजाऊ यांचे हिंदवी स्वराज्य निर्मितीतील योगदान **डॉ. एम. एस. कांबळे**	46
10	भारतीय लोकशाहीतील माध्यमांची भुमिका **डॉ. ए. बी. गालफाडे**	49

IMPACT FACTOR 5.47

ISSN 2349-1027

Indo Western Researchers (IWR)
Issue : XIII, Vol. II
Aug. 2020 To Jan. 2021
www.irasg.com

Research Paper 7 Hindi

भैरवप्रसाद गुप्त के उपन्यास साहित्य का परिचयात्मक आलेखन

डॉ. महावीर रामजी हाके
हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
गंगाखेड, जि. परभणी

भैरवप्रसाद गुप्त प्रसिद्ध समाजवादी कथाकार है । उन्होंने प्रेमचन्द की यथार्थवादी परंपरा को यशपाल के बाद समकालीन संदर्भो में आगे बढाने का स्तुत्य प्रयास किया है । सर्वहारा वर्ग को विशिष्ट सामाजिक परिस्थिति में क्रांति का मार्ग दिखाने का ऐतिहासिक कार्य भैरवप्रसाद जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से किया । इस सम्बन्ध में श्री राजेश्वर सक्सेना का मत उल्लेखनीय है "आजादी के बाद मृतप्राय सामन्तवादी व्यवस्था और नई पूँजीवादी व्यवस्था का द्वंद्वात्मक भौतिकवादी दृष्टि से जितना सही और सक्षम चित्रण तथा संघर्ष के क्रम मे बदलने वाली परिस्थितियों का विश्लेषण भैरवप्रसाद गुप्त ने किया है वैसा हिन्दी के अन्य अनेक जनवादी कथाकार नही कर सके है ।"१

भैरवजी के निम्नलिखित उपन्यास प्रकाशित हुए है : १) शोले २) मशाल ३) गंगा मैया ४) जंजीरे और नया आदमी ५) सत्ती मैया का चौरा ६) आशा ७) कालिन्दी ८) रंगा ९) धरती १०) नौजवान ११) अंतिम अध्याय १२) सत्ती जीनियस की प्रेमकथा १३) भाग्य देवता १४) मास्टर जी

१) शोले :-

शोले गुप्तगीका प्रथम उपन्यास है जो धारावाहिक रुप में पहिले १९४९ में मनोहर कहानियों में प्रकाशित हुआ । यह अत्यंत लोकप्रिय हुआ । सामन्त तथा किसान वर्ग को दो प्रेमियो की असफल प्रेम गाथा इसमे वर्णित है । इस प्रेम कथा का नायक बरन तथा नायीका शोभा है । बरनके माँ-बाप उसे बचपन में ही छोडकर चल बसे थे । बुढे विश्वास पात्र मुख्तियार ने उसे उसकी जमीनदारी के साथ साथ उसे बी.ए.तक पढाया है ।

बरन उन्हें दादाजी कहता और पिता के तुल्य पूज्य मानकर श्रद्धा करता है । उन्ही की सेवा परिश्रम और त्याग के कारण बरन की पढाई लिखाई तथा लालन पालन ठिक से होता है । जब बरन पढ लिखकर जवान हो जाता है तब मुख्तियार आम उस पर सबकुछ भार सौंपकर रामभजन में अपने बचे हुए दिन कटना चाहता है । इसी बीच एक किसान की गरीब लडकी शोभी के साथ रास्ते में बरन की मुलाकात होती है । वह उसे चाहने लगता है ।

बरन शोभा को अपनी रानी बनाने की बात

दादाजी के समक्ष रखता है। एक ग्रामीण कन्या के साथ बरन की शादी की कल्पना दादा जी नही कर सकते थे पर बरन की खुशी उनके लिए सर्वस्व थी। उसने जवाब दिया की शोभिया की शादी कही होगी जँहा उसका पहले रिश्ता तय हुआ है। इसलिए वह कहता है। "दादाजी आपको शायद मालूम नही कि आप किसके सामने बाते कर रहे है। किसान हूँ गरीब हूँ आपका तोबेदार हूँ फिर भी राजपूत हूँ। वह बाप-दादों का खून अब भी मेरे नसो में है। अब आप चले जाइए। मुझे कुछ नही सोचना है। मैं एक बार सोच चुका हूँ। अब किसी की हस्ती मुझे उस निश्चय से डिगा नही सकती।" परंतु शोभी की शादी दूसरे से हो जाती है।

शोभी अपने पहले प्रेम को भूल नही पाती क्योंकि उसे पति या सास से प्रेम नहीं मिलता। अगर उसे जरा भी संवेदना मिलती तो शायद वह अपने पूर्व प्रेम को धीरे-धीरे भूल जाती। लेकिन इसके लिये शोभीका पति ही व्यक्तिगत रुप से जिम्मेदार नही बल्कि इसके, लिय गुप्तजी सामाजिक व्यवस्था को उत्तरदायी ठहराते हैं।

२) मशाल :-

मशाल १९४८ में प्रकाशित गुप्तजी का दूसरा उपन्यास है। क्रांतिकारी विचारोंको मजदूरों तक पहूँचाने तथा उनको सक्रिय संघर्ष में शामिल होने का संदेश वे इसके द्वारा देना चाहते है। क्रांतिकारी विचारों की मशाल जलाकर लेखक मजदूरो में साहस पैदा करने का आकांक्षी है।

'नरेन' इस उपन्यास का नायक है। पिता की मृत्यू से उसे अपनी माँ के साथ चाचा के घर आश्रय लेना पडता है। चाचा उससे धर्म प्रचार की पुस्तके बेचने तथा सुबह प्रभात फेरी में गाना गाने का काम करवाना चाहता है। 'मशाल' में 'नरेन' तथा सकिना प्रमुख पात्र है। नरेन अपने फौजी जीवन में अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है। आजाद हिन्द सेनामें बडे उदात्त विचार से भर्ती होता है। अपने फौजी होने का उसे गर्व है। वह अपने गाँव वापस आता है। गाँव के लिए उसके मन में अत्यंत मोह है। वहाँ की मिट्टी, बचपन के खेल, खेते, बाग-बगीचे खलिहान से नरेश को बहेद प्यार है। मजदूर बनकर नरेन के अनुभव तथा उसकी और मंजूर, शकूर की बातचीत के क्रांतिकारी विचारोंको स्पष्ट करने में सहायक सिध्द हुई है।

वस्तुतः नरेन में क्रांति के बीज बोने का काम मंजूर तथा शकूर ही करते हैं। मजदूरों के दुश्मन तथा उनका खून पीने वाले तानाशाहो की आधुनिक युग के कारखानो के मालिकों का सामन्तो की तरह शोषक मानकर उनकी तिकडम बाजी का विरोध करना चाहते है। मजदुरों की आमसभा में इन्कलाब के नारे पूरे जोश के साथ लगाते है। उनका विश्वास है कि मजदूरों का संघर्ष निरंतर जारी रहने से विजय निश्चित है। भैरवप्रसाद गुप्तजी रुसी क्रांती की इस मशाल को समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है जिसके प्रकाश से, वह सारे समाज को आलेकित करना चाहता है। गुप्तजी ने लिखा है "कानपूर के मजदूर आंदोलन के इतिहास में आठ शहिदो और सत्तर घाल मजदूरों के लाल खून से कानपूर के मजदूरोंने जो जंगी एकता और क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चे की मशाल जलाई है वह कभी नही बुझेगीं उसको लाल रोशनी धीरे-धीरे सारे हिंदुस्थान में फैल जायेगी और जनता के सभी शोषित वर्गोंको भी इन्कलाबी एकता की लडी में बाँधकर उसे मजदूरों को इन्कलाब का रास्ता दिखायेंगी।३" प्रस्तूत उपन्यास में लेखकने क्रांति की मशाल जलाने-वाले कानपूर के मिल-मजदूरों के संघर्ष की विस्तृत कथा कही हैं।

३) गंगा मैया :-

'गंगा मैया' उपन्यास में गोपीचंद, मटरु आदि पात्र उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त गोपी की भाभी मटरु की पत्नी, गोपीके माता-पिता आदिका भी उल्लेखन इस उपन्यास का प्रधान पात्र है मटरु। वह गंगा मैया की गोद में पलता है। जहाँ वह रहता है वहाँ लोग सामुहिक रुप से रहने में भी डरते है। लेकिन मटरु निडर तथा श्रम से प्यार करने वाला मेहनती इन्सान है। अपनी मेहनत

से वह कछारी जमीन जोतकर बोता है । उसमे जब फसल लहलहाने लगती है तो सब आश्चर्य चकित हो जाती है । जमीदार उसका अनुकरण करना चाहता है । मटरु उसका विरोध कर किसानों का एक संगठन बनाता है । जमीदार तोडफोड की नीति अपनाता है । वह पुलिस की सहायता से मटरु पर झुठे इल्जाम लगाकर जेल मे डाल देता है । फिर भी मटरु की धाक वनी रहती है ।

विवाह की समस्याको मटरु सामाजिक समस्या के रुप में देखता है । सिर्फ भाभी की सहानुभूति के लिए नही बल्कि समाज सुधार के लिए निर्भीक और साहस का प्रतीक है । गोपी के पिता से वह बडी निर्भीकता से कहता है, "पागल तुम और तुम्हारा समाज है बाबूजी ।"४

मटरु यद्यपि गिरफ्तार हो जाता है पर उसकी प्रेरणा से तीन वर्ष तक उसके साथी जमींनदार से मुकाबला करते रहते है । जमीनदार पुलिस और न्यायालय की मदद से उसकी उभरती शक्ति को मरियामेट कर देना चाहता है । पर मटरु उनमें चेतना भर देता है और अपने साथियों को अधिक बलवान बनाना चाहता है ।

समाजवादी विचारधारा के अनुसार प्रेम और विवाह इस भौतिक जगत का विषय है । प्रेम को भौतिक परिवर्तनशील तथा जीवन की सहायक वस्तु के रुप में स्वीकार किया जाता है । 'गंगा मैया' में इस विचार को स्वीकार कर मटरु द्वारा गोपी और भाभीका विवाह सम्पन्न कराया गया है ।

४) सत्ती मैया का चौरा :-

सन १९५९ में प्रकाशित भैरवजी का यह बृहतकाय उपन्यास बडा लोकप्रिय हुआ है । आँचलिक उपन्यासों में इसकी गणना की जाती है । उत्तरप्रदेश के एक आँचल की मिट्टी से जन्मा यह उपन्यास भैरवजी को यिोष्ट सम्मान देने में समर्थ हैं ।

मन्ने और मुन्नी इस उपन्यास के दो प्रधान पात्र है । दोनो की बचपन से गहरी दोस्ती हो जाती है । मुन्नी हिंदू तथा मन्ने मुसलमान है किन्तु दोनोंका आकर्षण आत्मिक है । प्रौढावस्था में भी मन्ने के मन में अब भी मुन्नी की मैत्री का आकर्षण है । मुन्नी गरीब बापकी बेटी है । वह नाम के लिए ही जमीदार है । अन्दर से खोखली और ऋण से लदी जमीनदारी को जैसे-तैसे वह चलाये हुअे है । मुन्नी के पिताजी कॉलेज का खर्च नही उठा पाते इसीलिये उसकी पढाई रुक जाती है । मन्ने के अब्बा का अचानक स्वर्गवास हो जाता है । बाबू साहब अब्बा ने की हुई व्यवस्था की दुहाई देते हैं । किसी प्रकार उसे अपनी पढाई जारी रखने हेतु सहयोग देते है ।

'सती मैया का चौरा' इस उपन्यास में मन्ने, मुन्नी, महशर प्रधान पात्र है, आयशा-बसमतिया-बाबू साहब, जुबली मिया आदि गौण पात्र है जो कथानक को आगे बढाणे में सहायक है । सबसे महत्त्वपूर्ण पात्र है मन्नो ।

गुप्तजीने मन्ने और मुन्नी के माध्यम से उर्दू हिंदी के संघर्ष को प्रस्तुत किया है । दोंने में घनिष्ठ मित्रता है । हिंदु, मुसलमान होते हुए भी दोनो में कोई अलगाव पैदा नही होता । 'सत्ती मैया के चोरे' को तोडने के लिए दायर किये गए मुकदमें के बाद गाँव में आनेवाली खुशहाली के चित्र उसकी नजरोके सामने नाचने लगते है । वह सुनहरे सपने देखने लगता है ।

'सत्ती मैया का चौरा' में भैरवप्रसाद गुप्त ने "जमींदारी के अत्याचार तथा अत्याचार के विरुद्ध किसानों का संघर्ष पूंजीवादी व्यवस्था का विकास और उसकी असंगतियों सरकारी नेता और अधिकारियों द्वारा ली जाने वाली घूस, पण्डे, पुराहितों के थोथे आडंबर शिक्षा संस्थानो में होनेवाले भ्रष्टाचार स्वार्थ सिध्दि के लिए साम्प्रदायिक दंगे करानेवाले गांधी की खादी में घुसे हुए आधा तीतर (सामंत) आधा बट्टे (पूँजीपति) लोग पदों के भूखे उत्तरदायित्वहीन काँग्रेसी नेताओं पूँजीवादी व्यवस्था की गरल स्वरुप बेरोजगारी और कमरतोड मंहगाई आदि का समाजवादी दृष्टी से चित्रण किया गया है । तीन पीढियों से होनेवाले किसान और जमीदारों के संघर्ष उनकी हारजीत का मर्मस्पर्शी एवं संवेदनात्मक सम्प्रेषण

उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है ।"५

इस प्रकार भैरवप्रसाद गुप्त के साहित्यका संक्षिप्त आलेखन है ।

संदर्भ संकेत :-

१) व्यक्ति और रचनाकार - भैरवप्रसाद गुप्त पृ.सं. ७७

२) शोले - भैरवप्रसाद गुप्त पृ.सं. ४४

३) समाजवादी उपन्यासकार भैरवप्रसाद गुप्त - डॉ.सुनंदा पालकर पृ.सं. १६०

४) गंगा मैया - भैरवप्रसाद गुप्त पृ.सं. १४१

५) व्यक्ति और रचनाकार - भैरवप्रसाद गुप्त पृ.सं. १६६